IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अरस्तु के प्रमुख राजनीतिक विचारां का परीक्षण

डॉ. शीतल कुमारी

यूनान राजदर्षन में अरस्तु के महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है अरस्तु को प्रथम वैज्ञानिक विचारक भी माना जाता है और इनके राजनीति विचार को तो उच्च श्रेणी में रखा जाता है। हलांकि इनकी रचनाएं नीतिषास्त्र, धर्मषास्त्र, अर्थषास्त्र सोन्दर्यषास्त्र, राजनीतिषास्त्र एवं भौतिक षास्त्र पर भी आधारित है। इन सबपर इन्होने लगभग 400 पुस्तकों की रचनाएं की। यही वजह है कि इन्हे विष्व के ज्ञानकोष की संज्ञा दी जाती है

इसलिए भी अरस्तु को दुनियां के महानतम विज्ञानों की श्रेणी में अग्रगण्य स्थान दिया जाता है।

अरस्तु का जन्म 384ई.पू. में मकदूनिया के तट पर यूनान के एक औपनिवेषिक शहर स्टेगिरा में हुआ था। इनके पिता राजा के दरबाद में डॉक्टर थे। यह लगभग 20 वर्षो तक प्लेटो के साथ रहे। सन् 346ई.पू. अरस्तु की योग्यता से प्रभावित होकर मेसिडोनिया के राजा ने अपनु पुत्र के लिए उन्हे षिक्षक नियुक्त किया। और राजा का यह पुत्र बाद में सिकन्दर महान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आरस्तु के बारे में प्रो. डेनिंग लिखते हैं कि राजनैतिक संगठनों एवं उनके कार्यों में अरस्तु के आर्थिक विचारों का प्रभाव अस्थायी एवं समष्टिगत दर्षन के रूप में पड़ा जबकि प्रो. बार्कर का मानना है कि पाष्चात्य राजनीति विचार धारा में अरस्तु का सबसे महत्वपूर्ण योगदान संविधान की कृस्तृत व्याख्या है। इसी तरह एम.वी. फास्टर लिखते हैं कि ''मानव इतिहास'' में बौद्धिक उपलब्धियों की विषालता एवं उकने प्रभाव की गहनता प्लेटो का आुधनिक सर्वाधिकारवादी राज्य का लक्ष्य–

प्लेटो के आर्दष राज्य का उद्देष्य आध्यात्मिक है। प्लेटो मानते है कि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छा से अच्छा बनने की प्रवृति काम करती है पर कुछ परिस्थितियों को कटा कर वैसी अनूकूल परिस्थितियों का निर्माण करनपा चाहते हैं जिसमें मनुष्य की अच्छाई आंतरिक प्रकृति से अधिक सार्थक हो सके। इस तरह आधुनिक सर्वाधिकारवादी राज्य का लक्ष्य व्यक्ति का नैतिक या आध्यात्मिक उत्थान करना नही, वरन् स्वयं राज्य की समप्रभुता विष्व की श्रेष्ठता स्थापित करना है।

प्लेटो के राज्य एवं सर्वाधिकारी राज्य में अंतर

छोनो में एक महत्वपूर्ण अंतर है कि सर्वाधिकारी राज्य में व्यक्ति राज्य का साधन मात्र है और राज्य अपने आप में एक सर्वोपरि लक्ष्य है। प्लोटो के राज्य में व्यक्ति साधन नही हैं और न राज्य साध्य। जब प्लेटो राज्य के हित की बात करते हैं तब वह राजय रूपी संस्थान की बात नही रकते है बल्कि उसमें नागरिको के हित की बात करते हैं।

यूनान की संस्कृति ही दुनियां में श्रेष्ठ यह ठीक है कि प्लेटो यूनान की संस्कृति को ही दुनियां की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति मानते हैं लेकिन आधुनिक सर्वाधिकारवादी की तरह वे सांस्कृतिक श्रेष्ठता को सम्राजज्यवाद का आधार नहीं बनाना चाहते हैं प्लेटो का विचार अंग्रेजो या हिटलर की तरह संकीण नही था। सर्वाधिकारवाद से कोषो दूर है।

षारीरिक षिक्षण– जहां तक शारीरिक षिक्षण का प्रष्न है प्लेटो षारीरिक षिक्षण को सृदुढ़ शरीर के विकास के लिए महत्व देते हैं। उनके अनुसार स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ मानव का विकास संभव है "Sound Mindin a Sound Body"के सिद्धांत में उनका विष्वास है इसलिए षारिरीक षिक्षण का उद्देष्य Spiritual नहीं Athenian

सैनिक षिक्षण– जहां एक सैनिक षिक्षण का प्रष्न है तो प्लेटो राज्य की सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं और कोई भी व्यक्ति मानेगा स्थेन्स का अपमान प्लेटों को गंवारा नहीं था, इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से भी उसने सैनिक षिक्षा पर बल दिया। उनके राज्य के सैनिक व्यवस्था माननी मूर्खता होगी।

शिक्षा पर नियंत्रण– प्लेटो ने षिक्षा पर नियंत्रण अवष्य स्थापित किया था और ऐसा इसलिए किया था कि षिक्षा चरित्र निर्माण करती है समाज में नैतिकता लाती है चेतना जगाती है ओर एकता का विकास करती है न्याय और ज्ञान जिस आर्दषन व्यवस्था आती है षिक्षा ही दार्षनिक षासक पैदा करती है। इनके राज्य को एडुकेषन स्टेट कहा जा सकता है प्लेटो कहते है These should be a government more by education than by legislation.वास्तव में राज्य का उद्देष्य षिक्षा से प्राप्त होगा कानून से नही।

असत्य का आश्रय – इसके पीछे भी लोगों में ईष्वर के प्रति श्रद्धा एवं अध्यात्म का विकास करना था। प्लेटो कुछ सत्यों का निरपेक्ष मानते हैं।

इस प्रकार प्लेटो दार्षनिक षासन का हिमायती है लेकिन दार्षनिक कभी भी बल प्रयोग कर षासन में नही आ सकता और ऐसा जब भी करता है अपना दार्षनिक स्वरूप खो देता है।

वास्तव में सम्पूर्ण विष्लेषण जो भी हो, पाष्चात्य की सीमा में संभवतः उनका कोई दुसरा कमकक्ष नही है।

आज अरस्तु को राजनीतिषास्त्र का जनक माना जाता है। उन्होंने राजनीतिषास्त्र को नीति एवं आचाराषास्त्र से अलग करके एक स्वतंत्र विषय के रूप में उसका निर्माण किया और उसको एक निषचित स्वरूप प्रदान किया। वैसे तो अरस्तु ने अनेक रचनाएं की जिसने राजनीतिषास्त्र को एक नई राह दिखाई लेकिन अरस्तु की सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ पालिटक्स है। उनके इस ग्रंथ का उद्देष्य व्यवहारिक और दार्षनिक दोनो है।

उन्होनें एक अच्छे राज्य के स्वरूप का वर्णन किया है जहां व्यक्ति की खुषियां सुगमतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है।

बार्कर का कहना है कि अरस्तु की पद्धति वैज्ञानिक है उनका कार्य व्यवस्थित है, उसकी पुस्तके विष्लेषात्मक है। वे किसी भी चीज को तब तक स्वीकार नही करता था जब तक किवह अनुभव के और वैज्ञानिक आधार को पुष्ट ना हो। अरस्तु अपने गुरू प्लेटो से विभन्न विषेष से चलकर समान्य तक का रास्ता अपनाता रहा।

अरस्तु के कार्य पद्धति की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्न थें–

क) आगानात्मक और निगमनात्मक– अरस्तु की खोजबीन एवं जानकारी हासिल करने की पद्धति निगमनात्मक की अपेक्षा आगात्मक थी। अरस्तु की आर्दष और नैतिक जीवन संबंधी विचारो की झलक उनकी पुस्तक पोलिटिक्स मे साफ दिखाई देती है।

ख) ऐतिहासिक और तुलनात्मक – अरस्तु किसी तथ्य का विष्लेषण ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक पद्धति द्वारा करते थें।

ग) उद्देष्यपरक और सादृष्यमलक– अरस्तु ने राजनीति तथ्यों के विष्लेषण और अनुसंधान की उद्देष्यपरक और सदुष्य पद्धति को अपनाया है

घ) विष्लेषणात्मक और अवलोकनात्मक– अध्यन और प्रयोग एवं अवलोकन के माध्यम से अरस्तु ने बारीकी से विष्लेषण किया और उसके परिणामस्वरूप निष्कर्ष पर पहुंचते थे।

ठस प्रकार अरस्तु की अध्यन पद्धति आगमनात्मक, वैज्ञानिक, एंतिहासिक एवं विष्लेषणात्मक है अरस्तु ने राजनैतिक विज्ञान को भी तथ्यों पर आधारित किया है। यह गुण अरस्तु की मौलिक विषषता था और इसी आधार पर अरस्तु ले अपने राजनीतिक क्षेत्र में वर्तमानषासन प्रणाली की पद्धतियों का तुलनात्मक वैज्ञानिक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला।

विभिन्न विचारको का मानना है कि अरस्तु ने 158 नगर–राज्यों के संविधान का गह अध्ययन करके उन सभी के संबंध में अपना मत प्रकट किया है इसलिए अरस्तु एक महान राजनीतिज्ञ थे।

वास्तव में अरस्तु का कहना है कि राजनीति का आधार दर्षन, अनुभव एवं व्यवहारिक बुद्धिमानी होगा। अरस्तु ने यर्थावादी एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र एवं सत्ता में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। अरस्तु के राजनीतिक में वास्तविक संविधनो का वर्णन किया। संविधनों के लाभ एवं परिणामों का अध्यन करके अपने विचारों को वैज्ञानिक रू‍प में प्रस्तुत किया। इसका अर्थ ये कहा जा सकता है कि उसने एक नए विज्ञान के रू‍प में राजनीति विज्ञान को जन्म दिया।

अपने गुरू प्लेटो से बिल्कुल अलग थे दोनो के राजनीतिक दर्षन में काफी असमानताएं हैं जैसे कि–

1) प्लेटो कल्पना में भ्रमण करके संष्लेषण की पद्धति पर बल देते है लेकिन अरस्तु वस्तुस्थिति का वर्णन करते हुए विष्लेषणात्मक पद्धति पर बल देते हैं।

2) प्लेटो जहां समस्त घटनाओं का अध्यन नैतिकता के आधार पर करना चाहते हैं लेकिन अरस्तु राजनीतिषास्त्र एवं नीतिषास्त्र को पृथक करते हैं उनके अनुसर नीतिषास्त्र व्यक्तिगत हित से संबंधित है और राजनीतिकषास्त्र समाजिक हित से संबंधित है।

3) प्लेटो के विचार आर्दषवादी काल्पनिक है जबकि अरस्तु के विचार व्ज्ञानिकता पर आधारित है।

4) प्लेटो सर्वकालिक एवं सार्वदेषिक आर्दष राज्य की कल्पना करते है लेकिन अरस्तु मानते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न षासन प्रणाली उपयुक्त होती है।

5) प्लेटो अपने षासक एवं सैनिक वर्ग के लिए साभ्यवादी योजना का सृजन करते हैं अरस्तु इसके विरोध करते हैं उनके अनुसार विधि का षासन प्रत्येक दृष्टि से आवष्यक तो है ही साथ ही सम्पति एवं परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सहायक है।

6) अरस्तु राज्य की बहुलवादी प्रकृति को मानते हुए विविधता एवं एकता को राज्य की वास्तविक एकता मानते हैं

अरस्तु के राजनीतिक विचारो को निम्न रू‍प में अस्पष्ट किया जा सकता है।

i) मनुष्य एक समाजिक प्राणी है– उनके अनुसार समाज के अभाव में व्यक्ति का जीवन असंभव है प्रत्येक मुनष्य को दैनिक अवष्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज में रहना पड़ता है इसलिए इसका समाजिकरण आवष्यक है।

ii) राज्य को एक प्रकृतिक संस्था माना– वे कहते है कि सर्वप्रथम परिवार, फिर ग्राम और तब राज्य का निर्माण हुआ। अर्थात परिवार एवं ग्राम तब राज्य। अर्थात राज्य की उत्पत्ति का उद्देष्य पूर्व सुखी एवं आत्मनिर्भर एवं सम्मानपूर्ण जीवन है। अर्थात व्यक्ति को राज्य से पृथक कर दिया जाए तो आत्मनिर्भरता का अनुभव नही करेगा। इसलिए वो व्यक्ति के रूप में समस्टि का अंग है।

iii) परिवार एक प्रारंभिक संस्था– अरस्तु ने कहा कि परिवार को अगर नष्ट कर दिया जाए तो विभिन्न समाजिक मूल्य भी नष्ट कर दिया जाए तो विभिन्न समाजिक मूल्य भी नष्ट हो जाएगा। आर्दषन नागरिक के गुणों का विकास भी समाज में ही होता है।

iv) दास प्रथा का जोरदार सर्मथन – अरस्तु ने अपने युग में प्रचालित दास प्रथा का भी जोरदार सर्मथ्न करते हुए कहते हैं कि जन्म से ही कुछ व्यक्ति स्वामी स्वाभाव और आज्ञाकारी स्वाभाव के होते हैं कि बौद्धिक एवं आध्यतिमक गुणों का विकास तथा सुष्वमय जीवन के लिए दास सेवायें आवष्यक है।

v) कानून को सर्वाच्च माना– स्वतंत्रता और षक्ति में संतुलन स्थापित करने के लिए उन्होंने कानून को सर्वोच्च माना है। उनका कहना है कि कोई भी मानव पूर्ण विवेकषील नहीं है ऐसी स्थिति में कानून का षासन सर्वोतम है कानून की समप्रभूता को अरस्तु ने स्वीकार किया। इससे विष्व को एक नई दिषा मिली। वर्तमान समय में भी अधिकांष राज्य कानून के षासन को ही श्रेष्ठ समझते हैं और षासन का सर्वोतम आधार कानून ही माना जाता है साथ ही विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका का सजृ हुआ।

vi) आर्दषन राज्य – अरस्तु का आर्दष राज्य मिश्रित संविधान अर्थात Polity पर आधारित है जिसमें कुलीन तंत्र और प्रजातंत्र के दोष न होकर दोनो के गुण उपस्थित है। अरस्तु कहते हैं सर्वोकृष्ट राज्य वही है जिसमें जनता राजनीतिक क्रियाकलापों में भाग लेकर कानून का पालन करती है, विधी निर्माण एवं न्यायपालिका के संचालन में भाग लेती है। अतः अच्छा नागरिक वहीं है जो षासन करने और षासित होने का गुण रखता है लेकिन प्रकृति ने सबको समान नहीं बनाया है इसलिए कुछ व्यक्ति षासन करने के लिए तथा कुछ व्यक्ति षासित होने के लिए जन्म लेते हैं।

vii) Polity एक संयत प्रजातंत्र– अरस्तु के अनुसार Politysापेक्ष एवं व्यवहारिक होने के कारण इसके स्वरूप में परिवर्तन लाया जा सकता है। राज्य के विकास कीछः मूल आवष्यकताएं हैं यथा– योजना, कला, व्यापार, काषल, प्रषासक एवं पुजारी में सारी जनता विभक्त है। व्यक्ति अपने यौवनकाल में सैनिक कार्य, प्रौढ़ काल में प्रषासनिक कार्य तथा बुढ़ापे में पुजारी का कार्य राज्य के लिए करता है। अर्थात राज्य की व्यवस्था जन्म और जाति के आधार पर वर्गीकृत न होकर आयु और योग्यता के आधार पर वर्गीकृत हो।

viii) विदेषी संबंध– अरस्तु प्लेटो के विपरित राज्य का सागर तट पर रहना उपयुक्त मानते हैं जिससे विदेषों से संबंध स्थापित हो सके। साथ ही उत्पादि माल का निर्यात हो सके ताकि कृषि एवंव्यापार का विकास हो। राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से एक षक्तिषाली नौसेना रखी जाए।

ix) राज्य नियंत्रित षिक्षा – प्लेटो के समान अरस्तु भी राज्य नियंत्रित षिक्षा का विचार रखते हैं ताकि नागरिको को संविधान के अनुकूल ढाला जा सके। सैनिक षिक्षा, संगीत एवं गणित को विषेष स्थान प्रदान करते हैं।

x) निजी सम्पति– प्लेटो के विपरित अरस्तु सम्पति को परिवारिक जीवन के लिए अति आवष्यक मानते हैं इनके बिना साभ्य जीवन की स्थापना नही की जा सकती।

इस प्रकार अरस्तु ने विचार में अपने गुरू की आलोचना करके अभिन्नता के स्थान पर विभिनता को बल दिया। फिर भी व्यवहार में अरस्तु के आर्दषन राज्य की आलोचना की जाती है। उन्होंने दास, कारीगर, षिल्पकारों को तो नागरिकता से वंचित रखा ही स्त्रियों को भी अपूर्ण नागरिक के रूप में स्वीकार किया गया। उन्होंने दास वर्ग एवं बौद्धिक षिक्षा 14 वर्ष के बाद षुरू करके षिक्षा योजना कुंठित कर दिया। इसमें अहंकार की भावना का विकास किया।

प्रोरु वार्कर ने लिखा है– यद्यपि अरस्तु ने अपनी पॉलिटिक्स का प्रांरभ रिपब्लिक के सिद्धांतो की आलोचना से किया लेकिन पॉलिटिक्स का सिद्धांत लॉज से प्रभावित है और इसमें अधिकांष विचार प्लेटो के ही हैं।

जबकि एम.वी. फॉस्टर के षब्दों में–

अरस्तु सबसे बड़ा प्लेटोवादी है और प्लेटो के विचार का जिनता विषेष प्रभाव अरस्तु पर पड़ा उतना किसी दुसरे विचारक पर नही पड़ा।

किंतु इन सबके बावजुद यह कहा जा सकता है कि अरस्तु ने अपने व्यवहारिक अनुभव के आधार पर सुसंगत एवं सुस्पष्ट सिद्धांतों द्वारा राज्य के लिए राजनीति के लिए एक कीमती विरासत दी है। अरस्तु ने राज्य के सम्पूर्ण सिद्धांत से लेकर उसका उदय विकास कानून की समप्रभुता नागरिकता एवं संविधान में परिवर्तन आदि सभी मुद्दों को एक नया दृष्टिकोण दिया है।

प्रो. डेनिंग लिखते हैं कि –

राजनीतिक संगठनों एवं उनके कार्यो में अरस्तु के आर्थिक विचारो का भाव एक अस्थायी एवं समष्टिगत दर्षन के रूप में पड़ा।

ज्ञान एवं दर्षन में छिपी वैज्ञानिकता को देखकर ही इन्हें विष्वके ज्ञान कोष की संज्ञा दी जाती है।

संदभ ग्रंथ– अरस्तु उनका जीवन और स्कूल – कार्लो नताली

अरस्तु राजनीतिक दर्षन– रिचर्ड क्राउट

अरस्तु द डिजायर टृ अंडरस्टैड– जोनाथन लीथर

IGNUपष्चिमी राजनीतिक चिंतन MPSC 003

राजनीतक दर्षन में प्लेटो का स्थान अतुलनीय है इन्होने पाष्चात्य राजनीतिक चिंतन को एक दिषा एक आधार और एक अंतदृष्टि दी है। इर्मसन के लिए ''प्लेटो ही दर्षन था और दर्षन ही प्लेटों।'' इनके विरोधी भी इनके दर्षन के कायल थे।

एक समर्पित प्लेटो विरोधी जान राय चवैपमैन प्लेटो को ''ऐट्रजालिको का राजकुमार'' कहता है। इस तरह प्लेटो के सिद्धांतों की इतनी अलग–अलग तरीको की व्यख्या की गई है कि उनका निष्कर्ष निकालना एक टेढ़ा काम है।

सीधे षब्दों में प्लेटो का एक ऐसा दार्षिनिक था जितने अपने समय के नगर राज्यो की खराब होती समान्य परिस्थितयों को देखा और उसने बिमारी के लक्षण के बजाए उसका परिणाम पता लगाना चाहा।